### कोसी प्रतिष्ठान, कालिकापुर, सुपौल (बिहार) का सर्वेक्षण

कोसी के किसान : सर्वेक्षण रिपोर्ट : 2018

## कालिकापुर और लक्ष्मीनियाँ गाँवों से प्राप्त सर्वेक्षण-सैम्पल पर आधारित संक्षिप्त रिपोर्ट

**पृष्ठभूमि :** यह सर्वेक्षण लक्ष्मीनियाँ ग्राम पंचायत (प्रखंड छातापुर, जिला सुपौल) के भीतर आने वाले कालिकापुर और लक्ष्मीनियाँ गाँवों के सभी 14 वार्डों से लिए गए सैम्पल पर आधारित है। सैम्पल के लिए कम से कम 500 घरों तक पहुँचने का हमारा लक्ष्य था जिससे अधिक से अधिक 1000 घरों तक करने की हमने तैयारी कर रखी थी। 02 अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक जमीनी स्तर पर चला यह सर्वेक्षण एक-एक घर-दरवाजे तक जाकर किया गया। इस दौरान हम 917 घरों तक पहुँच पाए जिनमें से 106 घरों के सर्वेक्षण फार्म या तो अपूर्ण रह गए या जानकारी संतोषजनक नहीं थी जिस कारण उन 106 फार्म को रद्द करना पड़ा। (इनमें गलती हमारे एकाध नए सहयोगी की ही रही, उस घर-परिवार के लोगों की नहीं। लोगों ने तो हमें भरपूर सहयोग ही किया।) बहरहाल, जिन 811 घरों के नमूने का हमने अध्ययन किया है, ये पूरी तरह जाँचे-परखे और उक्त घर-परिवार के लोगों की अधिकतम जानकारी के अनुसार बताए गए आँकड़ों पर आधारित है जिसको हम शुद्ध आँकड़े मान सकते हैं। इनमें बाहरी मजदूरी से प्राप्त आय या कृषि पैदावार के वजन बताने में 5 से 10 प्रतिशत लोग दो-चार प्रतिशत कम बताए हों, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। यूँ हम सबने बार-बार क्रॉस क्वेश्चन कर के सही वजन या आय जानने की भरसक कोशिश की है। जिनके यहाँ हम गए उनके बगल में खड़े अड़ोसी-पड़ोसी से इसकी तस्दीक भी की है। उनके गाछ, घर, मवेशी और सुविधाओं के बावत अपनी आँखों देखने-जानने की भी हमारी सतत कोशिश रही। कुछेक की जानकारी के कंर्फर्मेंश के लिए हमें डाटा एंट्री के वक्त भी दुबारा उनको कॉल करके पूछना पड़ा।

इस सर्वेण को पूरा करने में मेरे (गौरीनाथ) साथ में मुख्य रूप से अनुपम सिन्हा, अभिषेक मिश्र और किशोर कुमार मिश्र ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। खुद मैंने लगभग 500 लोगों से बात की और उनके फॉर्म भरे। इसके बाद जहाँगीर आलम, संजय पासवान, मनोरंजन झा, एहसान अहमद, रंजीत राम, जय प्रकाश सरदार, चंदन कुमार झा आदि ने भी अपने तईं काफी सहयोग दिया। खासकर जहाँगीर आलम और मो. एहसान ने अपने जरूरी कार्यों से समय निकालकर कई-कई दिन दिए।

वरिष्ट पत्रकार अरविन्द मोहन का मार्गदर्शन और हमेशा हौसला बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करने वाले बड़े भाई डी.एन. ठाकुर की प्रेरणा बड़ा सबल रहा।

लोगों से प्राप्त सर्वेक्षण सैम्पल दो पृष्ठ के फार्म पर लिए गए हैं जिन पर परिवार के मुखिया या उसके घर के उपलब्ध प्रतिनिधि के हस्ताक्षर या निशान लिए गए हैं। अधिकांश के मोबाइल नंबर और सर्वेक्षणकर्ता के हस्ताक्षर भी हैं।

सर्वेक्षण-सैंपल अध्ययन के लिए डाटा इंट्री एक्सेल सीट पर की गई है।

एक्सेल सीट में दर्ज आँकड़े की संक्षिप्त रिपोर्ट अलग-अलग सत्र (विषय) अनुसार प्रस्तुत की जा रही है। इसके अतिरिक्त, विस्तृत किसी भी जानकारी के लिए आप एक्सल सीट की मदद खुद ले सकें इसलिए 811 लोगों के संपूर्ण आँकड़े वाली एक्सेल की फाइल भी आपके ई-मेल पर भेजी जा रही है।

## सत्र-1 : कृषक समाज : जीवन का सच

जिन कुल 811 घरों/परिवारों का अध्ययन किया जा रहा है उनके कुल सदस्यों की संख्या है 4,927 जिनमें से 2,385 महिलाएँ और 2,542 पुरुष हैं। इनमें 18 साल से अधिक उम्र के 2,563 स्त्री-पुरुष हैं और 18 साल से कम के 2,364 हैं। स्त्री-पुरुष अनुपात : 938 स्त्रियाँ हैं 1,000 पुरुषों पर।

## चार्ट-1 : आबादी स्थिति

|  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| घरों की संख्या | सदस्यों की संख्या | स्त्री | पुरुष | 18+ | 18- | 1000 पुरुषों पर स्त्री की संख्या |
| 811 | 4,927 | 2,385 | 2,542 | 2,563 | 2,364 | 938 |

## चार्ट-2 : गाँव/बिहार में कमाने वाले लोगों/परिवारों की संख्या

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| खेती के काम में कुल | | सरकारी नौकरी में कुल | | व्यापार में कुल | | प्राइवेट जॉब में कुल | | मजदूरी में कुल | |
| परिवार | **लोगों की संख्या** | **परिवार** | **लोगों की संख्या** | **परिवार** | **लोगों की संख्या** | **परिवार** | **लोगों की संख्या** | **परिवार** | **लोगों की संख्या** |
| 460 | 553 | 14 | 16 | 33 | 36 | 8 | 9 | 196 | 263 |

खेती में 399 घरों के एक-एक आदमी लगे हैं। 145 घरों में 2-2 आदमी खेती के काम करते हैं जबकि 8 घर में 3 लोग, 6 घरों में 4 लोग और 2 घरों में 8-8 लोग खेती करते हैं। जबकि 351 घरों में खेती नहीं होती है।

सरकारी नौकरी में 12 घरों के एक-एक व्यक्ति लगे हैं जबकि 2 घरों से 2-2 व्यक्ति सरकारी सेवा में हैं। यानी 811 में से मात्र 14 घरों से 16 व्यक्ति को बिहार में सरकारी नौकरी करने का अवसर मिला है।

छोटे-मोटे व्यापार में 30 घरों के एक-एक सदस्य लगे हैं जबकि तीन घरों से 2-2 व्यक्ति। यानी कुल 33 घरों से 36व्यक्ति व्यापार में सक्रिय हैं। इनमें से अधिकांश टेम्पो (थ्री व्हीलर) चलाते हैं, कुछ ट्यूशन सेंटर चलाते हैं, माल-मवेशी की खरीद-बिक्री जैसे काम करते हैं।

प्राइवेट जॉब/नौकरी में 8 घरों के कुल 9 व्यक्ति लगे हुए हैं। ग्रामीण मजदूरी में कुल 263 लोग लगे। 152घरों से एक-एक, 32 घरों से 2-2, 4 घरों से 3-3, 5 घरों से 4-4 और 3 घरों से 5-5 मजदूर जीविका के लिए गाँव में काम करते हैं।

## चार्ट-3 : गाँव में अलग-अलग पेशे से नगद आय

|  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | सरकारी नौकरी से आय | व्यापार से आय | प्राइवेट जॉब से आय | मजदूरी से आय | अन्य आय |
| कुल आय (रु. में) | 36,94,800 | 28,78,000 | 20,46,000 | 46,14,000 | 25,45,100 |
| औसत आय प्रति व्यक्ति (रु. में) | 2,30,925 | 79,944 | 2,27,333 | 17,544 | -- |

## पलायन संदर्भ : बाहर (दूसरे राज्य) कमाने गए लोग और उनसे आय :

दूसरे राज्यों में कमाने गए लोगों की कुल संख्या 853 है जिनमें 18 से 25 साल के 163 और 25 साल से अधिक के 690 लोग हैं। अलग-अलग धंधे में लगे इन सब की कुल आय 5,49,05,000 है।

**दूसरे राज्यों में गए लोगों की संख्या और आय :**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **बाहर मजदूरी करने गए मजदूरों की संख्या** | 833 | आय | 5,01,81,000 |
| **बाहर प्राइवेट जॉब में लगे की संख्या** | 15 | आय | 28,44,000 |
| **बाहर व्यापार कर रहे की संख्या** | 2 | आय | 8,00,000 |
| **बाहर सरकारी नौकरी में लगे की संख्या** | 3 | आय | 10,80,000 |

## विभिन्न समुदायों की सकल आय का विवरण :

|  |  |
| --- | --- |
| **सवर्णों के 95 परिवारों की कुल आय** | 2,47,09,270 |

|  |  |
| --- | --- |
| **221 ओबीसी परिवारों की कुल आय** | 2,64,10,870 |
| **29यादव परिवारों की कुल आय** | 54,63,880 |
| **59 मुखिया (मल्लाह) परिवार की कुल आय** | 47,15,700 |
| **108 राय (अमात) परिवार की कुल आय** | 1,27,68,190 |
| **25 मंडल (धानुक) परिवार की कुल आय** | 34,63,100 |

|  |  |
| --- | --- |
| **143 एससी परिवारों की कुल आय** | 1,54,14,570 |
| **69 राम (चर्मकार) परिवारों की कुल आय** | 75,46,780 |
| **43 पासवान (दुसाध) परिवारों की कुल आय** | 46,55,150 |
| **31 सरदार (बांतर) परिवारों की कुल आय** | 32,12,640 |

|  |  |
| --- | --- |
| **63 एसटी (उराँव/आदिवासी) परिवारों की कुल आय** | 73,35,720 |

|  |  |
| --- | --- |
| **246 मुस्लिम परिवारों की कुल आय** | 3,07,17,620 |

|  |  |
| --- | --- |
| **8 मुस्लिम विधवा परिवारों की कुल आय** | 5,48,920 |
| **13 हिंदू विधवा परिवारों की कुल आय** | 6,76,940 |

**सबसे कम आय वाले की एक सूची :**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **नाम** | **वार्ड** | **सकल आय (वार्षिक)** |
| मसोमात मदनी देवी W/o शिव ना. राय | 8 | 8,700 |
| मसोमात त्रिवेणी देवी | 10 | 14,400 |
| मसोमात उमा देवी पासवान | 8 | 15,000 |
| मसोमात कविता मिश्र | 11 | 20,100 |
| मसोमात जबरून खातून | 13 | 21,400 |

ज्ञातव्य हो कि पूरे पंचायत में सबसे गरीब मदनी देवी के पास डेढ़ कट्ठा जमीन मात्र है। विधवा पेंशन भी नहीं मिलता। घर बनाने के लिए भी कोई सरकारी सहायता नहीं मिला। जनधन खाता लॉक है और सिर्फ राशन के अनाज और मजदूरी का सहारा है। छोटे-छोटे दो बच्चों की इस माँ के दुःख अंतहीन हैं।

तमाम स्रोतों, संसाधनों को मिलाकर इन 811 घरों का सालाना सकल आय 10,96,71,510 है तो प्रति परिवार औसत आय 1,35,230 रुपए और प्रति व्यक्ति औसत आय 22,259 रुपए है।बाहर काम करने गए लोगों में से मात्र 5 के साथ छोटी-मोटी दुर्घटनों की सूचना मिली।यूँ बिहारी होने की वजह से दुर्व्यवहारों की घटनाएँ तो इनके साथ घटती ही रहती हैं।

# सत्र-2 : कृषि पैदावार और पशुपालन : विस्तृत लेखा-जोखा

811 घरों में से मात्र 460 घरों के 553 लोग खेती-बाड़ी के काम में लगे हैं। ये कृषक निजी 679.73 एकड़ में खेती करते हैं, तो 128.2 एकड़ में बटाई भी करते हैं। कुछ सिर्फ बटाई करते हैं तो कुछ बटाई के साथ-साथ अपनी जमीन में भी खेती करते हैं। थोड़े-बहुत लोगों के पास लीज पर ली हुई जमीन भी है।

सालाना उपज जो इनके घर आता है—

|  |  |
| --- | --- |
| **धान** | 5,140 क्विंटल |
| **गेहूँ** | 3,908.5 क्विंटल |
| **मक्का** | 7,218.5 क्विंटल |
| **दलहन** | 146.2 क्विंटल |
| **तेलहन** | 54.9 क्विंटल |
| **जूट** | 1,385 क्विंटल |

उपर्युक्त छह फसलों की खेती से कुल आय 2,43,46,360 रुपए होता है। यहाँ हमने फसलों की औसत दर इस प्रकार लगाई है—

|  |  |
| --- | --- |
| **धान** | 1,300 रु./क्विंटल |
| **गेहूँ** | 1,400 रु./क्विंटल |
| **मक्का** | 1,000 रु./क्विंटल |
| **दलहन** | 4,400 रु./क्विंटल |
| **तेलहन** | 3,200 रु./क्विंटल |
| **जूट** | 3,000 रु./क्विंटल |

दूसरे खाद्यानों में केला, राजमा और सब्जियों से कुल आय 5,03,000 रुपए है।

इसके अलावा गाछ-बाँस से सालाना आय भी हैं जो इस प्रकार हैं—

|  |  |
| --- | --- |
| **बाँस से** | 5,39,000 रु. |
| **आम से** | 3,35,700 रु. |
| **कटहल से** | 84,500 रु. |
| **अन्य पेड़ों से** | 1,36,000 रु. |

2008 की बाढ़ में कटहल के पेड़ बड़ी संख्या में सूख गए वरना इस स्रोत से आय करीब तीन गुना ज्यादा होती।

सभी मुख्य छ: कृषि के साथ दूसरे खाद्यान्न/सब्जी में गाछ-बाँस के आय को भी जोडऩे पर कुल 2,59,45,360 रु. होता है। यह राशि इन परिवारों के सकल आय का 23.65 प्रतिशत मात्र है।

इन बदहाल किसानों की उर्वरक पर सालाना खर्च 51,35,000 रुपए है।

हैरत की बात है कि

* इनमें से किसी किसान को उपज के रखरखाव और विपणन व्यवस्था की समुचित जानकारी नहीं है।
* बाजार और सरकार का सहयोग शून्य है।
* खेती में सुधार की जरूरत 811 में से 302 परिवारों को महसूस होती है लेकिन क्या सुधार हो उसकी स्पष्ट रूपरेखा इनके पास नहीं है। हैरानी की बात कि 483 लोग किसी सुधार की जरूरत भी नहीं महसूस करते हैं।
* एम.एस.पी. की जानकारी 100प्रतिशत घरों को नहीं है।
* फसल की कटाई लगभग सभी हाथ से ही करते हैं। यूँ गेहूँ की कटाई की शुरुआत भर मशीन से हुई है।
* फसल की तैयारी सभी मशीन से ही करते हैं। थोड़ा-बहुत लगभग 1 प्रतिशत, मशीन के अलावा वक्त-जरूरत हाथ से भी तैयारी करते हैं। लेकिन फसल तैयारी में बैलों का उपयोग अब बिल्कुल नहीं होता है।
* बैलों से खेती लगभग बंद होने की शुरुआत हो गई है। 811 परिवारों में से मात्र 67 परिवार बैल रखते हैं। जोड़ा बैल 58 परिवारों के पास हैं। दो परिवारों के पास तीन बैल हैं जबकि छह परिवार के पास सिर्फ एक-एक बैल है। 744 परिवारों के पास कोई बैल नहीं है।
* सिंचाई मुख्यत: डीजल से होती है। लगभग 99 प्रतिशत परिवार डीजल का इस्तेमाल करते ही हैं। हाँ, बिजली-मोटर की भी शुरुआत हो चुकी है। 82 परिवारों ने बताया है कि वे डीजल के अलावा बीच-बीच में बिजली मोटर से पानी पटवाने का काम लेने लगे हैं।
* चकबंदी की जरूरत भी लगभग हर जमीन-जगह वाले लोग महसूस करते हैं। हाँ, एक-दो प्रतिशत लोग इसमें धांधली की आशंका से भयभीत जरूर लगे।
* 660 परिवारों के घर अपनी जमीन में हैं, लेकिन विडंबना की बात है कि 151 परिवारों के पास बासडीह की अपनी जमीन नहीं है। जिनके पास बासडीह की जमीन नहीं है उनमें से ज्यादातर लोग ओबीसी (मल्लाह, अमात), आदिवासी (उराँव) और अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय से हैं। कुछ दलित (पासवान, राम) भी।

**कृषि से सबसे ज्यादा आय अर्जित करने वाले 5 बड़े किसान :**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **नाम** | **वार्ड** | **कृषि से आय (वार्षिक)** |
| **उमेश झा** | **10** | **4,41,200** |
| **मधु नारायण झा** | **10** | **4,24,400** |
| **जयभद्र झा** | **10** | **3,91,000** |
| **चंद्रभूषण झा** | **10** | **3,72,000** |
| **ठक्को राय** | **11** | **2,88,600** |

# पशुपालन :

गाय-भैंस के दूध और बकरा-बकरी, मुर्गा-मुर्गी, कबूतर के साथ ही मछली सहित से सालाना कुल आय 1,27,19,750 रुपए (एक करोड़ सत्ताइस लाख उन्नीस हजार सात सौ पचास रुपए) का 811 परिवारों के सकल आय में योगदान 11.59 प्रतिशत है। इनमें से गाय-भैंस के दूध से कुल आय 85,66,900, मांसाहार से कुल आय 28,38,350, मछली से आय 13,14,500 है।

अलग-अलग पशुओं की संख्या और उनके पालक परिवारों के विवरण—

## गाय+

* 811 में से 377 परिवारों के पास एक भी गाय नहीं है।
* 283 परिवारों के पास एक-एक गायें है।
* 119 परिवारों के पास दो-दो गायें हैं।
* 22 परिवारों के पास तीन-तीन गायें हैं।
* 7 परिवारों के पास चार-चार गायें हैं।
* 2 परिवार (विद्यानंद यादव, लक्ष्मीनियाँ, वार्ड नं. 11 और जीवन उराँव, कालिकापुर, वार्ड नं.-9) के पास पाँच-पाँच गायें हैं।
* 1 मात्र परिवार 7 गाय वाला है, वार्ड नं. 13, लक्ष्मीनियाँ के ताहीर मियाँ का परिवार।
* गाय वाले कुल 434 परिवारों में कुल गायों की संख्या 632 है।

## भैंस

811 में से सिर्फ 120 परिवार भैंस पालते हैं। 691 परिवार के पास कोई भैंस नहीं। भैंस वाले इन 120 परिवारों की कुल भैंसों की संख्या 190 मात्र है।

* 75 परिवारों के पास सिर्फ 1-1 भैंस है।
* 27 परिवारों के पास 2-2 भैंस हैं।
* 15 परिवारों के पास 3-3 भैसें हैं।
* 2 परिवारों (विद्यानन्द यादव और सदानंद यादव) के पास 5-5 भैंसें हैं।
* 1 मात्र परिवार गणेश यादव के पास 6 भैंसें हैं।

यूँ दयानंद यादव के पाँच पुत्रों के सभी भैंसों की गिनती इकट्ठा करें तो 18 भैसों के वे मालिक हैं। साथ ही गौरतलब है कि स्वर्गीय रामप्रसाद यादव के तीनों पुत्र सदानंद यादव (इनके पुत्र गणेश यादव सहित), दयानंद यादव, विद्यानंद यादव के यहाँ कुल भैसों की संख्या 34 होती है जो कि कुल 190 भैसों की संख्या का 17.9 प्रतिशत होता है।

## बकरा/बकरी

811 में से कुल 371 परिवार ऐसे हैं जो बकरी-बकरा पालते हैं। 440 परिवार ऐसे हैं जो बकरी-बकरा नहीं पालते।

* 112 परिवार ऐसे हैं जो सिर्फ एक-एक बकरी या बकरा पालते हैं।
* 143 परिवार ऐसे हैं जो दो-दो बकरी/बकरा पालते हैं।
* 56 परिवार ऐसे हैं जो तीन-तीन बकरी/बकरा पालते हैं।
* 22 परिवार ऐसे हैं जो चार-चार बकरी/बकरा पालते हैं।
* 23 परिवार ऐसे हैं जो पाँच-पाँच बकरी/बकरा पालते हैं।
* 4 परिवार ऐसे हैं जो छह-छह बकरी/बकरा पालते हैं।
* 2 परिवार ऐसे हैं जो सात-सात बकरी/बकरा पालते हैं।
* 4 परिवार ऐसे हैं जो आठ-आठ बकरी/बकरा पालते हैं।
* 4 परिवार दस-दस बकरी या बकरा पालने वाले भी हैं जिनमें सुरेन्द्र राय (वार्ड नं. 11, लक्ष्मीनियाँ), किशोरी राय (वार्ड नं. 11, लक्ष्मीनियाँ), मनोज राम (वार्ड नं. 7, लक्ष्मीनियाँ) और मो. आबिद-2(वार्ड नं-6) आते हैं।
* 1 मात्र परिवार ठक्को राय का है जो 25बकरी/बकरा पालता है।

## मुर्गा/मुर्गी

मुर्गा/मुर्गी पालने वाले 811 में से सिर्फ 135 परिवार हैं। इनके घरों में कुल मुर्गे/मुर्गियों की कुल संख्या 471 है।

* 676 परिवारों के पास एक भी मुर्गा/मुर्गी नहीं है।
* 6 परिवारों के पास सिर्फ एक-एक मुर्गा/मुर्गी है।
* 48 परिवारों के पास 2-2 मुर्गा/मुर्गी है।
* 11 परिवारों के पास 3-3 मुर्गा/मुर्गी है।
* 40 परिवारों के पास 4-4 मुर्गा/मुर्गी है।
* 18 परिवारों के पास 5-5 मुर्गा/मुर्गी है।
* 8 परिवारों के पास 6-6 मुर्गा/मुर्गी है।
* 1 परिवार मो. इसरायल का जिनके पास 8 मुर्गा/मुर्गी हैं।
* 3 परिवार, फूल मोहम्मद, मो. आजिम, मो. इस्लाम के पास दस-दस मुर्गे-मुर्गियाँ हैं।

## कबूतर

मात्र 33 ऐसे परिवार हैं जो कबूतर पालते हैं। इन घर में कुल 227 कबूतर हैं।

* 7 परिवार ऐसे हैं जो 2-2 कबूतर पालते हैं।
* 9 परिवार ऐसे हैं जो 4-4 कबूतर पालते हैं।
* 4 परिवार ऐसे हैं जो 5-5 कबूतर पालते हैं।
* 2 परिवार ऐसे हैं जो 6-6 कबूतर पालते हैं।
* 2 परिवार ऐसे हैं जो 8-8 कबूतर पालते हैं।
* 1 परिवार ऐसा है जो 9 कबूतर पालता है।
* 5 परिवार ऐसे हैं जो 10-10 कबूतर पालते हैं।
* 1 परिवार मो. सहीम मियाँ का है जिनके पास 20 कबूतर हैं।
* 2 परिवार (फतेह मोहम्मद और आबिद-2) ऐसे भी हैं जिनके पास 25 कबूतर हैं।

## मछली

कोसी की पुरानी धाराओं के अवशेष के रूप में बहती मिरचैया और गेडऱा नदियों के किनारे बसे कालिकापुर और लक्ष्मीनियाँ में सदा से मछली भी जीविका में सहायक रही है। 811 में से 70 परिवार ऐसे हैं जिनकी थोड़ी-बहुत आय मछली से भी है। खासकर 'मुखिया’सरनेम धारी मल्लाह जातियों में से कई की जीविका का प्रमुख साधन मछली ही है।

* मछली से सालाना 1,000 से 3,000 आय के बीच वाले 4 परिवार हैं।
* मछली से सालाना 5,000 से 10,000 आय वाले 16 परिवार हैं।
* मछली से सालाना 12,000 से 20,000 आय वाले 27 परिवार हैं।
* मछली से सालाना 24,000 से 30,000 आय वाले16 परिवार हैं।
* मछली से 80,000 सालाना कमाने वाले बालेसर मुखिया हैं और 90000 सालाना कमाने वाले सकलदेव मुखिया हैं।

बालेसर मुखिया और सकलदेव मुखिया के जैसे गाँव में कुछ और परिवार भी हैं जो मछली पर ही अपनी जीविका चलाते हैं।

# सत्र-3 : शिक्षा और स्वास्थ्य (कोसी परिक्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में)

**शिक्षा :**

811 घरों के 4,927 व्यक्ति में से पढ़े-लिखे की स्थिति—

|  |  |
| --- | --- |
| **स्नातक, स्नातकोत्तर या इससे अधिक पढ़ चुके या पढ़ रहे हैं** | 40 व्यक्ति |
| **इंजीनियरों की संख्या है** | 6 |
| **10+2 कर चुके या कर रहे हैं** | 182 |

**चार्ट : वर्तमान में पढ़ रहे छात्रों की स्थिति**

|  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| **कुल छात्र** | **गाँव के स्कूल में** | **जिला में** | **जिला से बाहर** | **राज्य से बाहर** |
| 1090 | 900 | 102 | 67 | 21 |

811 में से 307 परिवारों के कोई बच्चे नहीं पढ़ रहे हैं या उनके घर पढऩे वाले बच्चे नहीं हैं।

जिन 504 घरों में बच्चों की पढ़ाई पर खर्चे हैं उनकीचार्ट-स्थिति:

|  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| **5,000 या उससे कम खर्च करने वाले परिवारों की संख्या** | **6,000 से 10,000 तक खर्च करने वाले परिवारों की संख्या** | **10,001 से 25,000 तक खर्च करने वाले परिवारों की संख्या** | **28,000 से 50,000तक खर्च करने वाले परिवारों की संख्या** | **55,000 से 1,00,000 तक खर्च करने वाले परिवारों की संख्या** | **1,10,000 से 1,50,000 खर्च करने वाले परिवारों की संख्या** | **1,50,000 से 2,00,000 खर्च करने वाले परिवारों की संख्या** | **2,00,000 से ज्यादा खर्च करने वाले परिवारों की संख्या** |
| 131 | 160 | 136 | 44 | 25 | 7 | 1 | 1 |

504 परिवारों / घरों के बच्चों की पढ़ाई पर कुल खर्च :93,14,200

पढ़ाई पर हो रहे खर्चे की स्थिति अलग-अलग समुदायों/वर्गों में कैसी है, यह जानने के लिए नीचे का विवरण देखें—

|  |  |
| --- | --- |
| **सवर्णों के 95 परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 37,87,000 |

|  |  |
| --- | --- |
| **221 ओबीसी परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 17,43,000 |
| **29यादव परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 3,92,000 |
| **59 मुखिया (मल्लाह) परिवार के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 2,38,000 |
| **108 राय (अमात) परिवार के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 8,78,300 |
| **25 मंडल (धानुक) परिवार के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 2,34,700 |

|  |  |
| --- | --- |
| **143 एससी परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 9,60,500 |
| **69 राम (चर्मकार) परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 3,95,000 |
| **43 पासवान (दुसाध) परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 3,15,500 |
| **31 सरदार (बांतर) परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 2,50,000 |

|  |  |
| --- | --- |
| **63 एसटी (उराँव/आदिवासी) परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 1,29,000 |

|  |  |
| --- | --- |
| **246 मुस्लिम परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 23,43,700 |

|  |  |
| --- | --- |
| **8 मुस्लिम विधवा परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 29,000 |
| **13 हिंदू विधवा परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च** | 1,40,000 |

## शिक्षा पर औसत खर्च :

|  |  |
| --- | --- |
| **पढ़ाई पर प्रति एससी परिवार में औसत खर्च** | 6,717 |
| **पढ़ाई परप्रति ओबीसी परिवार में औसत खर्च** | 12,189 |
| **पढ़ाई परप्रति मुस्लिम परिवार में औसत खर्च** | 9,527 |
| **पढ़ाई परप्रति सवर्ण परिवार में औसत खर्च** | 41,573 |
| **प्रति एस टी परिवार में औसत खर्च** | 2,048 |

# स्वास्थ्य :

इलाज के पीछे 811 घरों के लोगों के कुल खर्चे हैं 86,34,000 रुपए। प्रति परिवार औसत खर्च है 10,646 और प्रति व्यक्ति स्वास्थ्य मद में खर्चे हैं 1,752 रुपए।

गौरतलब है कि पूरे ग्राम पंचायत में कोई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नहीं है, न कोई एम.बी.बी.एस. डॉक्टर। यहाँ की ज्यादातर आबादी का स्वास्थ्य ग्रामीण अप्रशिक्षित डॉक्टरों, जिनको ‘झोलाछाप डॉक्टर’ कहा जाता है, के ही भरोसे है, वही इनके भगवान हैं।

यूँ तो ज्यादातर सर्दी, जुकाम, बुखार, पेट खराबी जैसी आम बीमारी ही इनको होती है, लेकिन बड़ी बीमारियों से ग्रसित लोगों की संख्या भी कम नहीं।

कैंसर, ब्रेन ट्यूमर, अल्सर के साथ-साथ न्यूरो प्रॉब्लम्स, ऑर्थो प्राब्लम, मेंटल प्रॉब्लम के भी दर्जनों मरीज भरे पड़े हैं। आँख की परेशानी ऐसी-ऐसी कि मरीज को पता भी नहीं। गायनी (स्त्री रोग) के इतने प्रकार भरे पड़े हैं कि 10 स्त्री रोग विशेषज्ञों की टीम कई सप्ताह काम करे, टेस्ट करवाए तो शायद ऑपरेशन की जरूरत वाली पच्चीस-पचास से अधिक महिलाएँ इनमें मिल जाएँ। ल्यूकोरिया की शिकायत करने वाली महिलाओं की तादाद सबसे बड़ी है। मुश्किल यह कि ल्युकोरिया को लेकर कई तरह के भ्रम भी हैं इनके बीच। यहाँ ज्यादातर ल्यूकोरिया पीड़ित महिलाओं को लगता है कि इसका निदान ऑपरेशन मात्र है।

इलाज ये लोग आम तौर पर गाँव में करवाते हैं। यहाँ केस बिगडऩे पर जिला के भीतर सिमराही और जिला के बाहर फारबिसगंज या जोगबनी जाते हैं। वहाँ इन्हें प्राइवेट डॉक्टरों की सेवा लेनी पड़ती है। सरकारी अस्पतालों में इनका इलाज लगभग नहीं होता है। इलाज के लिए इनको जानकारी अड़ोसी-पड़ोसी के साथ ग्रामीण झोला छाप डॉक्टर ही देते हैं। अन्य जानकारी की श्रेणी में बाहर गाँव के संबंधी या बाहर पढऩे-लिखने वाले छात्र आते हैं।

इलाज के लिए कर्ज लगभग 99 प्रतिशत घरों के लोगों को लेना पड़ता है। कई लोग तो इलाज के कर्जे में जमीन-जगह बेचकर कंगाल हो चुके हैं।

स्वास्थ्य बीमा गाँव में रहने वाले लगभग किसी परिवार के पास नहीं है। स्वास्थ्य बीमा संबंधी कोई जागरूकता भी नहीं। उस पर आफत यह कि झाड़-फूक/ओझा-गुनी पर विश्वास के चलते अक्सर केस बिगाड़ देते हैं या कई केस में जान गँवा देते हैं। झाड़-फूक पर विश्वास का आलम यह है कि जिन लोगों ने इस पर विश्वास होने से इनकार किया है, वैसे लोग भी अंदरखाने विश्वास रखते हैं और परेशानी आने पर इसका शिकार होते हैं।

हॉस्पीटल-डॉक्टरों को लेकर इन्हें परेशानी ही परेशानी रहती लेकिन इनकी फितरत देखिए कि इल्हाम नहीं है।

# सत्र-4 : बाढ़ और विनाश

कोसी के छाडऩ पर बसे इन गाँवों की इंच-इंच जमीन बाढ़ की कहानी कहती प्रतीत होती है। यहाँ के लोग यूँ तो पीढिय़ों से बाढ़ की विभीषिका झेलने के अभ्यस्त रहे हैं, लेकिन तटबंध बनने से पहले की कहानी कुछ और थी। तब बाढ़ धीरे-धीरे आती थी और लोगों के पास उससे बचने के अपने निजी इंतजामात भी होते थे। तब नाव प्राय: घरों में होती थी। लोगों से नाव क्या छूटी जीवन नैया खेना कठिन होता गया।तटबंध बनने के बाद यहाँ के लोगों ने पहली बार 2008 में ही बड़ी बाढ़ का सामना किया।

यूँ हर पाँच-दस सालों में वर्षा जनित बाढ़ और नदियों के उफान से इनकी फसलों की दाही होती है, मगर जान-माल की वैसी क्षति नहीं।

2008 में आई विनाशक बाढ़ से 811 परिवारों की निजी फसलों/घरों की क्षति 5,63,75,000 रुपए के बराबर है। इसके अलावा जान-माल की जो क्षति हुई वह अलग है और उसके आकलन संभव नहीं।

यहाँ के लोग हर बरसात के मौसम में बाढ़ न आने पर भी तटबंध टूटने को डर के साये में जीतेहैं। 100 प्रतिशत परिवार के लोगों ने स्वीकार किया कि वे बिना बाढ़ आये भी कोसी के तटबंध टूटने के डर/दु:स्वप्न के बीच जीते हैं।

पानी के आधिक्य वाले इस इलाके की विडंबना यह है कि यहाँ का पानी पीने लायक नहीं। अनपढ़ सामान्य जन को यही पता है कि इसमें 'आयरन’बहुत है और इससे गैस अधिक बनता है, पेट खराब हो जाता है। लेकिन उसको नहीं मालूम आर्सनिक सहित कितने ऐसे हानिकारक तत्व इसमें आ गए हैं कि यह पानी उनके लिए बीमारियों की वजह बन गया है। सरकार का इस तरफ ध्यान बिल्कुल ही नहीं है। सर्वेक्षण में 811 परिवारों में से 733 लोगों ने स्वीकार किया कि उनको पेट संबंधी कई तरह की परेशानी होती है। यूँ 78 लोगों को नहीं पता कि इससे कोई दिक्कत है, वे इसके अभ्यस्त जैसे हो गए हैं।

# सत्र-5 : सरकारी सुविधाएँ और जनता तक उसकी पहुँच

सरकारी सुविधाओं को लेकर लोगों की शिकायत आम है। यहाँ हमने जो जानकारी ली है, वह आँख खोलने वाली है। कुछ आँकड़े चौंकाने वाले भी हैं।

पहले क्रमश: सर्वेक्षण रिपोर्ट—

* गैस चूल्हा का उपयोग 228 परिवार करते हैं, 583 परिवार नहीं करते।
* बिजली का उपयोग 767 परिवार करते हैं, 44 नहीं करते।
* पक्की सड़क 239 परिवारों के घर के आगे है, 572 परिवारों के घर के आगे नहीं। जिनके घर के आगे पक्की सड़क के नाम पर ढलुआ सड़क है, उसका किसी और सड़क से लिंक नहीं है।
* पक्का शौचालय : 247 के घर में है, 341 के घर में नहीं है और 223 शीट भर लगा रखा है। (यूँ सरकारी दावे 100 प्रतिशत घरों में शौचालय होने का है। इस पंचायत को चार महीने पहले ही कलक्टर साहब ने ओडीएफ घोषित कर दिया है।)
* शौचालय के लिए पैसे 133 परिवारों को मिला है, 678 को नहीं मिला है। [यूँ सात परिवार ऐसे भी मिले जिन्होंने पैसे लेकर भी शौचालय नहीं बनवाए हैं। इन सात में दो ओबीसी और सात सवर्ण (ब्राह्मण) हैं।]
* घर के लिए इंदिरा आवास/पुनर्वास योजना/प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत सहयोग 302 परिवारों को मिला है, 509 को कभी नहीं मिला है।
* सरकारी ऋण : कृषि ऋण 15 लोगों ने लिया है, जबकि पशुपालन के लिए ऋण मात्र दो लोगों ने। व्यवसाय के लिए किसी ने कोई ऋण नहीं लिया है।
* नरेगा/मनरेगा योजनाओं का लाभ मात्र 180 लोगों को मिलता है, 631 को नहीं मिलता।
* सरकारी सुविधाएँ शौचालय के लिए पैसा लेने, आवास के लिए सहयोग हासिल करने, नरेगा/मनरेगा का लाभ लेने आदि के लिए 286 परिवार के लोगों ने स्वीकार किया कि कमीशन देना पड़ता है। 286 परिवार ने घोषित किया है, यूँ अलिखित तौर पर हर सुविधा के लिए एक निश्चित कमीशन तय है जो हर हासिल करने वाला देता ही है; ऐसी जानकारी लोगों ने दी।
* राशन कार्ड के लिए घूस देने की बात रणधीर राय की पत्नी ने ऐलानिया तौर पर कही।
* राशन का अनाज 717 परिवार के लोगों को मिलता है, 94 परिवार को नहीं मिलता।

जिन्हें राशन का अनाज नहीं मिलता उनमें से कुछ परिवार के मुखिया का नाम और उसकी वार्षिक आय देखें—

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| क्रम. | नाम | वार्ड नंबर | वार्षिक आय |
| 1. | मसोमात अनितादेवी | 9 | 18,000 |
| 2. | मो. कुदुस-3 | 2 | 22,700 |
| 3. | मसोमात प्रेमलता देवी | 11 | 27,800 |
| 4. | फुरकी राम | 7 | 29,700 |
| 5. | लक्ष्मण राय | 8 | 30,000 |
| 6. | मसोमातराजदा खातून | 6 | 35,000 |
| 7. | वीरेन्द्र उराँव | 9 | 35,400 |
| 8. | मसोमात नाजरा खातून | 6 | 36,000 |
| 9. | लक्ष्मण पासवान | 11 | 40,000 |
| 10. | सुजीत राय | 8 | 40,000 |

राशन का अनाज जिन्हें मिलता है, उनमें प्रमुख कुछ नाम और उनके आय गौरतलब हैं—

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| क्रम सं. | नाम | वार्ड नं. | आय (वार्षिक) |
| 1. | चंद्रानंद झा | 11 | 8,98,000 |
| 2. | पंचानन ठाकुर | 10 | 8,93,500 |
| 3. | ललितानंद झा | 11 | 8,11,200 |
| 4. | चंद्र भूषण झा | 10 | 7,97,000 |
| 5. | विनोद मिश्र | 11 | 7,87,300 |
| 6. | फतेह मोहम्मद | 6 | 6,42,200 |
| 7. | जयभद्र झा | 10 | 5,97,000 |
| 8. | मधु नारायण झा | 10 | 5,59,400 |
| 9. | मो. सईद | 13 | 5,47,000 |
| 10. | विद्यानंद यादव | 11 | 5,19,000 |
| 11. | भुवन ठाकुर | 10 | 4,98,400 |
| 12. | मनु उराँव | 9 | 4,94,160 |
| 13. | हीरेन्द्र मिश्र | 11 | 4,50,200 |
| 14. | ठक्को राय | 11 | 4,38,600 |
| 15. | फूल मोहम्मद | 6 | 4,25,000 |

यूँ पूर्व मुखिया जय प्रकाश सरदार (इस सर्वेक्षण सूची से बाहररद्द किये फॉर्म में उन्होंने खुद स्वीकारा है) भी राशन का अनाज लेते हैं और पिछले चुनाव में मुखिया प्रत्याशी परिवार के मो. सुल्तान (वार्षिक आय- 2,81,400) भी।

जनधन खाता का झुनझुना 706 परिवार के पास है। बस 105 परिवारों को नहीं है, लेकिन इनमें ज्यादातर वे हैं जिनके पास सामान्य सेविंग एकाउंट हैं। मुश्किल से दो-चार लोग मिले जिनके पास अपना कोई एकाउंट नहीं है।

## सत्र-6 : लोक कला, संस्कृति और शिल्पकला

कभी इस इलाके में राजा सलहेस, नैका बंजारा, दुलरा दयाल, कुमर बृजभान, सामा चकेवा, आल्हा उदल, जालिम सिंह, सती कमला, रमखेलिया, विदापत आदि के नाच हुआ करते थे। सकल ग्रामीण जन रात-रात भर बाहर खुले मैदान में ओस-ठंड की परवाह किये बगैर इत्मीनान से बैठकर देखते रहते थे। मगर अब वह अतीत हो गया। जब हम सर्वेक्षण के लिए निकले थे तो हमें भरोसा था कि इनमें से कम से कम तीन-चार नाच तो बचे होंगे इन गाँवों में! लेकिन आश्चर्य कि पुराने तमाम लोक नाचों में सिर्फ 'सती कमला’की टीम बची रह गई है।

बरिसलाल मुखिया जो जाति के मल्लाह हैं 'सती कमला’नाच टीम के खेबनहार हैं। सुकराती मुखिया इनके टीम सहयोगी हैं जो जोकर की भूमिका अदा करते हैं। लेकिन लोक जीवन के तमाम तत्वों से जुड़ा है यह 'जोकर’चरित्र, जिसका एक स्तर अभी तक बचा हुआ है। इनकी टीम में करीब 20 कलाकार हैं। इन्हें साल में दस से पन्द्रह जगह मेले या किसी कार्यक्रम में 'सट्टा’मिलता है। एक रात के लिए इनको अधिक से अधिक 10-15 हजार रुपए मिलता है। बरिसलाल मुखिया की इस टीम और इस नाच को संरक्षण-प्रशिक्षक देकर व्यापक समाज तक पहुँचाने की सख्त जरूरत है।

रविलाल राय पहले नटुआ हुआ करते थे। होली टीम के स्थायी फीचर तो थे ही, कई नाच में भी भाग लेते थे। आजकल रविलाल राय भगैत गायन करते हैं। तुलसी राय भी इनके साथ भगैत टीम में शामिल हैं। तुलसी अच्छा गाते हैं और बजंतरी भी हैं।

मिथिलेश कुमार और राजेश कुमार की रुचि भी नाच कंपनियों की तरफ है, लेकिन ये आज के द्विअर्थी नाच वाले मंच की तरफ बढ़ गए हैं। लोक कला के संवर्धन में इनका योगदान नजर नहीं आता। इसी तरह दुर्गानंद ठाकुर द्विअर्थी संवादों के आसरे जोकर का काम अनेक मंचों पर करते हैं। इनकी खासियत यह है कि इस पेशा से इनके परिवार की जीविका चलती है। आशु और सोहन नए युवा हैं, सुना कि ठीक ठाक गाते हैं। जरूरत है कि इनको प्रशिक्षण और मार्गदर्शन मिले।

वार्ड नं. 7 का राय टोला कभी कलाकारों का गढ़ हुआ करता था। बच्चन राय क्या गाते और बजाते थे! लगता है, उनके साथ ही उधर के काफी कुछ चले गए।

नाच-गाने की स्थिति की दयनीयता इससे भी समझी जा सकती है कि इससे साल में मात्र 2,46,500 की आय है।

दूसरी तरफ बाँस और पटेर से बनने वाले सामानों की माँग क्या घटी, यह कला लुप्त होने के कगार पर पहुँच गई है। बाँस से छिट्टा बनाने वाले एक सरदार परिवार लक्ष्मीनियाँ में मिला। डोम जाति के एक-दो घर ललितग्राम रेलवे स्टेशन के करीब हैं जो बाँस के सामान आज भी बनाते हैं।

कोसी का कछार झौआ, पटेर और कास-कूस से आबाद रहा है, लेकिन आज झौआ का झाड़ू (खडऱा) देखने को भी नहीं मिलता। पटेर की चटाई और 'गोनरि’अभी मिल रहे हैं, लेकिन प्लास्टिक कब इनको पूरी तरह खदेड़ दे, कुछ कहा नहीं जा सकता। यहाँ वार्ड नं. 7 और 8 में 25-30 ऐसे सरदार बंधु बचे हुए हैं जो पटेर का सामान बनाना जानते हैं। लेकिन बस जानते हैं, नियमित बनाते नहीं। मुश्किल से तीन-चार लोग हैं जो कभी-कभार बैठे ठाले की जुगाली के क्रम में साल के कुछ दिन गोनरि-चटाई बुन लेते हैं। इनसे 15 शिल्पकारों की सालाना आय है 77,000 रूपये।

पारम्परिक चटाई, टोकरी, छिट्टा की जगह प्लास्टिक के सामान की दखल के विरोध में सभी 811 परिवारों ने अपना मत व्यक्त किया है।

फिर भी पटेर की कला विलुप्त होने की दिशा में बढ़ रही है।इस शिल्पकला को आज संरक्षण-संवर्धन की सख्त जरूरत है। कोसी क्षेत्र की यह अद्भुत कला यहाँ की पहचान रही है, इस बात को हमें समझना चाहिए। वरना वह दिन दूर नहीं जब सिकी-मुंज की बनी दौरी, मौनी, चंगेरी की तरह यह भी दुर्लभ हो जाए और दिल्ली हाट में तथाकथित 'मधुबनी पेंटिंग’ (जो कि वास्तव में मिथिला पेंटिंग है) की बगल में रखकर लाखों में बिके!

—गौरीनाथ

चेयरमैन एवं ट्रस्टी 'कोसी प्रतिष्ठान’

कालिकापुर, पो. लक्ष्मीनियाँ, वाया-बलुआ बाजार

जिला-सुपौल-854339 (बिहार)